महामारी और त्यौहारों का बदलता स्वरूप

वृतिका गर्ग
७-बी

मार्च से छाई एक भयानक महामारी,
कोविड, तंग करने वाली वो बीमारी,
बहुत जल्द पूरे विश्व में यह रोग फैला,
बड़ी चिंता में सभी को डाला।

सब कुछ हुआ धीरे-धीरे बंद,
सिर्फ घर पर जैसे हो कोई दंड,
सखियों के संग छूटे मिलन,
जब स्कूल न जा सके हम।

लाखों मर गए, लाखों बीमार,
पर हम न माने इससे हार।
सुरक्षित रहना और इसे खत्म करने का,
हम ज़रूर उपाय खोज निकलेंगे।

त्यौहारों को अब भी धूम-धाम से मनाएँगे,
इस साल एक अलग ही तरीके से।
सावधानी से हम १-२ को ही अब बुलाते,
मस्ती करते वे बंधन वापस हैं खिलते।

दुर्गा पूजा हम अपने घरों में इस साल मनाएँगे,
पंडाल न जाए तो घर पर खुद आइडल बनाएँगे,
पंडाल में भी सावधानी से कुछ लोग ही जाएँगे,
उचित दूरी मनाकर और मास्क पहनेंगे ।

दीपावली की शुभकामनाएँ हम वर्चूअली देंगे,
अब भी दियों से अपने घरों को जगमगाएँगे,
रंगोली घरों के अंदर ही बनाएँगे,
और ग्रीन दिवाली मनाएँगे।

हैलोईन पर भी 'ट्रिक और ट्रीट' करेंगे,
पर एक पूरे अलग ही रंग से,
वर्चूअली सब को डराएँगे,
मिठाई डिलिवर करके देंगे।

अब बारी है बच्चों की,
इस लड़ाई में अपना हिस्सा करने की,
और अधिक सावधानी उन्हें अपनाने की।

सभी त्यौहारों को धूम-धाम से,
अलग तरीके से हम जमकर मनाएँगे,
महामारी से निपटते हुए,
हम त्यौहारों का पूरा मज़ा उठाएँगे!